विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2568, चैत्र पूर्णिमा, 12 अप्रैल, 2025, वर्ष 1, अंक 2 (संशोधित) (जुलाई 1971 से लगातार प्रकाशित)

रजि. नं. MHHIN/25/RAA23 प्रति अंक शुल्क ₹ 0.00

अनेक भाषाओं में पत्रिका देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 100.00, (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

धम्मवाणी

न वेदनं वेदयति सपञ्ञो, सुखम्पि दुक्खम्पि बहुस्सुतोपि।
अयञ्ञ धीरस्स पुथुज्जनेन, महा विसेसो कुसलस्स होति॥

– संयुत्तनिकायो, सळायतनवग्गो 2. वेदनासंयुत्तं, सल्लसुत्तं 254

(शुद्ध धर्म का) बहुश्रुत प्रज्ञावान व्यक्ति शरीर पर होने वाली सुखद अथवा दुःखद संवेदनाओं को भोगता नहीं। कुशल के क्षेत्र में अज्ञानी के मुकाबले ज्ञानी की यही महान विशेषता होती है।

धर्म का शुद्ध स्वरूप ही अमृत है

वार्षिक आचार्य सम्मेलन, धम्मगिरि, 1 मार्च 1989, प्रारंभिक उद्बोधन

विदेशों से आये हुए धर्मसेवको!

धर्म कैसे फैले, किस प्रकार फैले, इसे समझने, इस पर चिंतन करने के लिए यहां आये। किस तरह फैलना चाहिए और क्यों फैलना चाहिए, इसके निर्देश तो आज से 2500 वर्ष पूर्व मिल चुके। उस निर्देश के अनुसार फैलायेंगे तो कहीं भूल नहीं होगी। उस प्रयोजन से फैलायेंगे, तो कल्याण की बात होगी, मंगल की ही बात होगी।

हर धर्मदूत के लिए स्पष्ट निर्देश है– **बहुजनहिताय बहुजनसुखाय लोकानुकम्पाय।...** ऐसे धर्म का संदेश लेकर जो बाहर जाता है, वह सबको धर्म का संदेश पहुँचा देगा, सबका हित कर देगा, सबको सुख पहुँचा देगा, यह नामुमकिन बात है। धर्म कामना अवश्य सर्वहित की, सर्वमंगल की, सबके भले की होनी चाहिए। व्यावहारिक बात यह कि जो व्यक्ति धर्म का संदेश लेकर जाय उसका लक्ष्य एक ही हो कि उसकी अपनी सामर्थ्य के अनुसार कैसे अधिक से अधिक लोगों का भला हो सके, हित हो सके, सुख पहुँच सके, दुःखों से उनकी मुक्ति हो सके। पर धर्म का संदेश ले जाने वाला व्यक्ति कैसे करे इस काम को?

"लोकानुकम्पाय"– बड़ी करुणा हो, बड़ी मैत्री हो अंदर। लक्ष्य है अधिक से अधिक लोगों का भला कैसे हो, अधिक से अधिक लोगों को सुख कैसे पहुँचे? उनके प्रति करुणा नहीं होगी, मंगल मैत्री का भाव नहीं होगा तो लक्ष्य अच्छा होते हुए भी करना नहीं आया। करने का तरीका नहीं आया। यह मापदंड मिला, और फिर आगे का कदम **"देसेथ धम्मं।"** क्या देना है लोगों को? क्या बांटना है, क्या सिखाना है? बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा– **"देसेथ धम्मं।"** धर्म देना है, धर्म बांटना है। और कुछ न जुड़ जाय इसके साथ! नहीं तो जो जुड़ गया, वह प्रमुख हो जायेगा और धर्म गौण हो जायेगा। धर्म देना है।

'धर्म' क्या होता है? **"आदिकल्याणं, मज्झेकल्याणं, परियोसानकल्याणं।"** धर्म धर्म तभी है जबकि धारण करने वाला धारण करना आरंभ कर दे तो कल्याण शुरू हो गया। धारण करना शुरू किया कि कल्याण होना शुरू हुआ। यह मापदंड है मापने का कि धर्म दे रहे हैं कि कुछ और दे रहे हैं? धर्म दिया तो आदि में कल्याण शुरू हो गया। और आगे बढ़ा तो कल्याण ही कल्याण। मध्य में भी कल्याण ही कल्याण। और जहां धर्म धारण करने के अंतिम लक्ष्य तक पहुँच गया, माने पूरी तरह धर्म धारण कर लिया तो परम कल्याण हो गया। धर्म धर्म है कि नहीं, उसे मापने का यही मापदंड कि हर कदम कल्याणकारी है कि नहीं? "आदि में कल्याणकारी, मध्य में कल्याणकारी, अंत में कल्याणकारी, कदम-कदम कल्याणकारी।"

कहीं उलझ न जाये इसलिए फिर समझाया– **"सात्थं सव्यञ्जनं।"** व्यंजनों का इस्तेमाल तो करना पड़ेगा, किसी भाषा का, किन्हीं शब्दों का, अन्यथा किसी को कैसे समझायेंगे? लेकिन उसमें भी भूल न हो जाय। तो **"सात्थं"**– लोगों का अर्थ सिद्ध होता है कि नहीं? नहीं तो उलझ जायेगा। अपने पांडित्य प्रदर्शन में लग जायेगा, विद्वता का प्रदर्शन करने लगेगा। देख, कैसी लच्छेदार भाषा में मैं धर्म समझा सकता हूं। देख, कितनी उपमाओं के साथ, कितने तर्कों के साथ धर्म समझा सकता हूं! अरे, तो केवल व्यंजन ही व्यंजन रह गया। लाभ नहीं हुआ। लाभ होगा तभी जबकि 'शब्द' कल्याणकारी हैं, अन्यथा शब्द कोरे शब्द हैं। बहुत सजग रहेगा। धर्मदूत का काम करने वाला व्यक्ति बड़ा सजग– सार्थक तो है न? जो बोल रहा हूं, उससे सचमुच अर्थ सिद्ध होता है न लोगों का? **"सात्थं सव्यञ्जनं।"**

फिर समझाया, भूल न कर बैठे। धर्म को स्वयं ही ठीक से नहीं समझेगा तो लोगों को क्या समझायेगा? भूल न कर बैठे। **"केवलं परिपुण्णं"**– परिपूर्ण है। इसमें कहीं जोड़ने की भूल न कर दे। क्या जोड़ोगे? परिपूर्ण है। इतना परिपूर्ण है, इतना भरा हुआ है घड़ा कि कुछ और डालोगे तो बाहर छलक पड़ेगा। जगह ही नहीं, परिपूर्ण है। और **"केवलं परिसुद्धं"**– अरे, इतना शुद्ध है, क्या निकालोगे इसमें से? कौन-सी बात इसमें खराब है जिसे निकालोगे? उलझ जाओगे। जो **केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं** है, उसमें से कभी भूलकर कुछ निकालना नहीं, उसमें भूलकर कभी कुछ जोड़ना नहीं। एक-एक आदेश बड़ा महत्त्वपूर्ण आदेश है– **"केवलं परिपुण्णं, केवलं परिसुद्धं।"**

फिर **"ब्रह्मचरियं पकासेथ"**– उन दिनों की भाषा में ब्रह्मचर्य माने धर्मचर्य। धर्म के आचरण का प्रकाशन करना है– **"पकासेथ"।** पहले कहा– **"देसेथ"**– उपदेश देना है, समझाना है लोगों को। लेकिन सारी समझावन धरी रह जाएगी, सारे उपदेश धरे रह जायेंगे, अगर सिखाने वाले के जीवन में धर्म नहीं उतरा। उसका अपना धर्माचरण प्रकाशित हो। उस प्रकाश में लोग देखेंगे– इस प्रकार धर्म का जीवन जिया जा सकता हो तो सार्थक होगा। अन्यथा धोखा हो जायेगा, कोरा उपदेश हो जायेगा। प्रकाशन नहीं हुआ न? लोगों ने देखा नहीं कि धर्म का जीवन कैसे जिया जाता है, तो कोरे उपदेशों से क्या प्राप्त करेंगे? वाणी-विलास, बुद्धि-विलास, किसी का भावावेश जगा देंगे। अरे, मिलेगा क्या? मात्र **"सव्यञ्जनं"** होकर रह गया, "सार्थक" नहीं हुआ। उपदेश कोरा उपदेश हो गया, उसका कोई लाभ नहीं हुआ। अरे, **'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय'** तो दूर रहा, किसी एक का भी हित-सुख नहीं होगा।

यानी, मापदंड तो हमें मिला हुआ है, अब उस मापदंड के अनुसार काम करना है। फिर भी जी चाहेगा इसके साथ कुछ जोड़ दें। बड़ा ऊंचा झंडा उठा कर कहेंगे– बौद्ध धर्म है। जोड़ दिया न? हिंदू धर्म, जैन धर्म...? तो जो जोड़ा वह प्रमुख हो जायेगा, धर्म गौण हो जायेगा। अब धर्म का महत्त्व नहीं रह गया। बौद्ध है कि नहीं, जैन है कि नहीं, हिंदू, ईसाई, मुस्लिम है कि नहीं? डूब गया न? सारी बात धरी रह गयी। जो काम सिखाने निकले, सब धरा रह गया। इस खतरे से बचना है।

धर्म कुदरत का कानून है। कोई व्यक्ति मुक्त होता है, और सचमुच मुक्त होता है, सचमुच परम परिशुद्ध होता है, सचमुच सम्यक संबुद्ध होता है तो ऐसा व्यक्ति परम परिशुद्ध धर्म सिखायेगा, कुदरत का कानून सिखायेगा, विश्व का विधान सिखायेगा। क्या होने से क्या हो जाता है- यह नियम है, यह विधान है, यही सिखायेगा। क्या नहीं होने से क्या नहीं होता- यह नियम है, विधान है, जो सब पर लागू होता है।

उन दिनों की भाषा में इसी को **"पटिच्चसमुप्पाद"** कहा। यानी, **प्रतीत्यसमुत्पाद**– यह होने से उसके साथ-साथ यह उत्पन्न हो जायेगा। यह नहीं होगा तो यह नहीं उत्पन्न होगा। बहुत स्पष्ट शब्दों में समझाया– **"यो पटिच्चसमुप्पादं जानाति, सो धम्मं जानाति; यो धम्मं जानाति, सो पटिच्चसमुप्पादं जानाति"।** जो प्रतीत्यसमुत्पाद को जानता है, माने कुदरत के कानून को जानता है, ऐसा-ऐसा होगा तो उसके साथ-साथ ऐसा-ऐसा परिणाम आयेगा ही। ऐसा-ऐसा नहीं होगा तो यह परिणाम नहीं आयेगा। यह कुदरत का कानून है जो सब पर लागू होता है। जो इसे समझता है, वह धर्म को समझता है। और जो धर्म को समझता है वह इसी को समझता है, और क्या समझेगा?

धर्म बौद्ध, हिंदू, जैन हो जायेगा तो यह बात कैसे समझेगा? उलझ गया न? यह बात जो सब पर लागू पड़ती है– भीतर कुछ प्रिय लगा तो राग जगाया, दुःखियारा हो जायेगा। भीतर कुछ अप्रिय लगा तो द्वेष जगाया, व्याकुल हो जायेगा। सब पर लागू होती है न? भीतर प्रिय लगा फिर भी राग नहीं जगाया। समझ गया, अरे, यह तो अनित्य है भाई, बदलने वाला है भाई! राग नहीं जगाया तो दुःख नहीं आया न? भीतर कुछ अप्रिय लगा और समझ गया, अरे, अनित्य है भाई, बदलने वाला है, द्वेष नहीं जगाया तो दुःखी नहीं हुआ न? अरे, यह व्यक्ति अपने को हिंदू, बौद्ध, जैन, ईसाई कहता फिरे, भारतीय, अमेरिकन कहता फिरे, क्या फर्क पड़ा रे? जिस दिन यह बात समझ में आ गयी, उस दिन धर्म समझ में आ गया। नहीं तो धर्म नहीं समझ में आया। जब तक धर्म नहीं समझ में आया, उलझा ही रह जायेगा।

कुछ नहीं जुड़े। जरूरत नहीं। **"देसेथ धम्मं"**, लोगों को क्या देना है? धर्म देना है, और कुछ न देने लगें कहीं। धर्म देना है और ये खतरे हैं जिनसे बचना है। आरंभ में ही यह खतरा शुरू होगा, यानी, **लोकानुकम्पाय** न छूटे, अन्यथा लोगों पर अनुकंपा करना तो भूल जायेगा, अपने आप पर अनुकंपा करेगा। मेरा अर्थ कैसे सिद्ध हो? और वह भी पागलपन से।

सही अर्थ समझ में आया अच्छी बात है, यह सारा धर्म लोगों को सिखाना अच्छी बात है, लोगों का प्रत्यक्ष भला होता है, इससे अच्छा काम क्या होगा? यह सारे विश्व में फैले, बड़ी अच्छी बात है। फैल रहा है, यह भी अच्छी बात है। पर इस सारी तस्वीर में 'मैं' कहां? मेरी हस्ती क्या? अरे, मेरा तो प्रकाशन हुआ ही नहीं? धर्माचरण का प्रकाशन हो या न हो, मेरा प्रकाशन हुआ कि नहीं। मेरी इमेज कहां? इस सारे काम में मेरा अस्तित्व कहां? मुझे कोई जानता ही नहीं? इतना सहयोग देता हूं, इतनी सेवा करता हूं! अरे, चारों ओर फिर-फिर कर यहां शिविर लगाया, वहां शिविर लगाया; यहां व्यवस्था की, वहां व्यवस्था की; और देख, इतना दान दिया फिर भी कोई धन्यवाद तक नहीं देता? मुझे कोई पूछता भी नहीं? मेरा कोई सम्मान भी नहीं? तो अपने काम का नहीं। पहले बहुत अच्छा था। अब सब बिगड़ गया। क्योंकि हमारा सम्मान नहीं न? हमारी कोई सुनता ही नहीं न?

अरे, बावला आदमी, कहां उलझ गया रे? क्या धर्म सिखायेगा लोगों को? क्या धर्मसेवा करेगा? तेरी छवि तेरे लिए प्रमुख हो गयी? तेरा अहं तेरे लिए प्रमुख हो गया? कहां अनुकंपा रे? कहां मैत्री? यूं जांचता रहेगा। सचमुच धर्म का संदेश ले जानेवाला व्यक्ति अपने आपको जांचता रहेगा। कहीं उद्देश्य तो नहीं बिगड़ गया? ऊपर-ऊपर से उद्देश्य ठीक लगता है। बस, सेवा करने का या सिखाने का तरीका तो नहीं बदल गया? अपनी छवि कैसे आगे ले आऊं? मेरी इमेज कैसे आगे आये– कहीं यह तो नहीं होने लगा? बहुत सजग रहना होगा। तलवार की धार पर चलना है, इतना सँकरा रास्ता है, फिसले कि गये। बहुत सजग रहना होगा।

खूब परिपूर्ण है, जोड़ने की जरूरत नहीं है, फिर भी कोई आयेगी ऐसी धर्म विरोधी शक्ति, ऐसा बढ़िया बाना पहन कर आयेगी– अरे, धर्म सिखाने वाले भाई! देख, यह काम कितना बढ़िया है, कितना बढ़िया है? देख, इससे लोगों का कैसा कल्याण होता है? साथ-साथ यह भी चले, अच्छा ही तो है न! बता, बुराई क्या है इसमें? घबरा उठेगा, जवाब नहीं दे पायेगा। अच्छा बाबा, जोड़ लो थोड़ा-सा। यह भी जोड़ लो। थोड़े दिन भी नहीं बीतेंगे, और देखोगे, जो जोड़ लिया, वह प्रमुख हो जायेगा और धर्म फिर अँधेरे में चला जायेगा।

ऐसा होता आया, इसी मारे धर्म डूबा। सिखाने वालों को, सेवा करने वालों को बहुत सजग रहना होगा। शुद्धता में आंच नहीं आ जाय। कुछ जुड़ नहीं जाय। कितनी ही अच्छी बात हो, अच्छी बातें करो। हमारी सारी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं। खूब अच्छी तरह करो पर यहां नहीं जुड़ जाय। बिल्कुल नहीं जुड़ जाय। आवश्यकता नहीं। अरे, जन्म-जन्म के दुःखों से मुक्त करने वाला मार्ग, सारे भव-चक्र के दुःखों से मुक्त करने वाला मार्ग, उसे तो गौण कर दे और यह लोकीय लाभ होता है न! देखो, यह लोकीय लाभ होता है न! ऐसा भूत सिर पर सवार कर लेगा तो काम नहीं कर पायेगा, बिल्कुल नहीं कर पायेगा।

पूज्य गुरुदेव के जीवन काल में ऐसी बहुत-सी घटनाएं देखीं। किस कदर, किस कदर जरा-सा भी यह आदमी हिला, थोड़ा-सा भी दूसरे काम में लगा कि रोका।... बहुत अडिग रहे। हमें जो शुद्धता परंपरा से मिली, अपनी

ओर से उसमें कुछ नहीं जुड़ने देंगे। अपनी ओर से इसमें से कुछ नहीं निकालेंगे। अरे, तभी तो 2500 वर्षों तक शुद्ध रहा और प्राप्त हुआ न हमें? इन 2500 वर्षों में एक भी आचार्य ऐसा पागल होता कि क्या हुआ, यह भी जुड़ जाय तो अच्छा है न? इससे शरीर बड़ा स्वस्थ रहता है। इससे अमुक बात बड़ी अच्छी हो जाती है। यह बहुत अच्छा... अरे, अच्छा है तो कहीं और करो भाई! इसे तो अपने शुद्ध रूप में चलने दो। 'वह मत करो', ऐसा नहीं कहते न?

तो बहुत सजग रहना पड़ेगा। मार है, अपना पासा फेंकेगा, जाल बिछायेगा। जरा नासमझी आयी कि उलझ जायेंगे। खूब बचना होगा, खूब बचना होगा।

धर्म का शुद्ध रूप कायम रहेगा तो अमृत है, लोगों को अमृत मिलेगा। यह पानी भी प्यास बुझाता है न? थोड़ा-सा पानी भी दीजिये लोगों को। पानी प्यास बुझाता है न! अरे, यह अमृत पीना बहुत कठिन है। इसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। अमृत अवस्था तक पहुँचने में बहुत कठिनाई। प्यास बुझती है न, पानी पीना चाहिए न? अरे, तो पानी का प्याऊ कहीं बगल में लग जाय भाई! यहां पानी का प्याऊ लगा कि बस, सिखाने वाला पानी-पांडे हो जायेगा। अमृत धरा रह जायेगा। अब पानी पीने लोग आयेंगे यहां, अमृत लेने नहीं आयेंगे। और जब पानी-पांडे हो जायेगा तो एक बोर्ड और लग जायेगा– यहां हिंदू-पानी मिलता है, यहां बौद्ध-पानी मिलता है, यहां जैन-पानी मिलता है। पानी है न? पानी तो हिंदू भी हो सकता है, कौन जाने बौद्ध भी हो सकता है। वह भी होता तो नहीं, पर उस पर क्या मालूम रंग चढ़ा दें। पर अमृत तो अमृत है भाई! क्या रंग चढ़ाओगे उस पर? बड़ा सजग रहना पड़ेगा।

ये मूलभूत बातें, इनको ध्यान में रखोगे तो सचमुच **बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय, लोकानुकम्पाय**– जितना भी हित हो जाय किसी का, जितना भी सुख हो जाय। हमारी जितनी शक्ति है, जितना सामर्थ्य है, बड़े प्यार से, बड़ी करुणा से, हम अपनी ओर से बांटते हैं। थोड़े लोगों का लाभ हुआ, तो थोड़े लोगों का हुआ। ज्यादा का हुआ, तो ज्यादा का हुआ। कैसे अधिक लोग आने लगें– इसके लिए यह और कर दें तो बहुत आयेंगे, वह और कर दें तो बहुत आयेंगे; ऐसा कुछ कर दो तो बहुत आयेंगे। यह बहुत आयेंगे, बहुत आयेंगे, का प्रलोभन कहीं धर्म को अशुद्ध न कर दे। बहुत सजग रहकर काम करना है। तो आगामी तीन दिनों में जो कुछ भी चिंतन करो, जो कुछ भी नियम बनाओ, जो कुछ भी प्लानिंग करो, इस बेसिक बात को न भूल जाओ। इस मूलभूत बात को, इस नींव को, इस बुनियाद को नहीं भूलोगे तो सचमुच बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय होगा और उमड़ता रहेगा भीतर से प्यार ही प्यार, करुणा ही करुणा।

आवश्यकता पड़ेगी तो कठोरता का व्यवहार करना पड़ेगा। जहां कोई व्यक्ति कोई पागलपन करता हो जिससे उसकी हानि हो सकती है, औरों की हानि हो सकती है तब बहुत कठोर होना पड़ेगा। घबरायेंगे नहीं। भीतर करुणा ही करुणा, मैत्री ही मैत्री। एक ही भाव कि इसका हित कैसे हो? इसका दु:ख कैसे दूर हो? इन मंगलभावों से, इस करुण चित्त से, इस सद्भावना से, जो व्यक्ति जिस किसी पद पर, जिस किसी नाम से, अरे, क्या पड़ा है इन पदों में, इन नामों में? बड़े विनीत भाव से सेवा करनी है तो धर्म की सेवा होती है। और जहां पद पर आसीन होकर के अपनी महत्ता के साथ सेवा करना चाहता है तो अपनी सेवा ही गयी-गुजरी, तो सही सेवा क्या करेगा? अपनी सेवा करेगा तो अपने को मुक्त करने के बजाय बंधन का काम करने लगा। अपनी भी हानि, औरों की भी हानि।

खूब समझदारी के साथ, भले संख्या कम हो, भले काम करने वाले भी कम हों, सिखाने वाले भी कम हों, धर्म का संदेश भी कम लोगों तक जाता हो, उसकी चिंता नहीं, शुद्धता नहीं बिगड़े। धर्म की परिपूर्णता में आंच नहीं आये। धर्म की परिशुद्धता में आंच नहीं आये। 2500 वर्ष तक जिस गुरु-शिष्य परंपरा ने आंच नहीं आने दिया, उनका उपकार मानें कि हमें प्राप्त हो रही है। नहीं तो हम भी करते रह जाते– यह हिंदू है, बौद्ध है, जैन है, ऐसा है, वैसा है। करते ही रह जाते। यह प्रवचन दो, वह प्रवचन दो, यह कर्मकांड करो, वह कर्मकांड करो। यह तर्क करो, वह बहस करो। हमारा अच्छा, तुम्हारा बुरा। इसी में रह जाते न? या बस कोरा उपदेश, **"सव्यञ्जनं",** व्यंजन ही व्यंजन, शब्द ही शब्द— वीतराग बनो, वीतद्वेष बनो, स्थितप्रज्ञ बनो, अनासक्त बनो, बड़ा कल्याण हो जायेगा, बड़ा कल्याण हो जायेगा। अरे, करना तो बताओ न! कैसे करें? अर्थ सिद्ध तब होगा न! उसी में उलझे रह जाते न! तो कितने मंगल की बात हुई, कितने कल्याण की बात हुई कि भले थोड़े से लोगों ने गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा इसकी शुद्धता को कायम रखा, इसकी पूर्णता को कायम रखा तो आज धर्म हमें प्राप्त हो रहा है, आगे न जाने कितनों को प्राप्त होगा? प्राप्त होगा ही।

यह बुनियादी बात, इसे न भूल करके खूब सेवा करें। इसी में औरों के मंगल के साथ-साथ अपना मंगल निश्चित है। औरों के भले के साथ-साथ अपना भला निश्चित है। औरों के सुख के साथ-साथ अपना सुख निश्चित है। खूब समझदारी, खूब मैत्री और खूब धर्मबल के साथ अपना भी मंगल साधें और अनेकों का मंगल साधें। अपना भी कल्याण करें, अनेकों का कल्याण करें। अपनी भी स्वस्ति-मुक्ति, अनेकों की स्वस्ति-मुक्ति।

भवतु सब्ब मङ्गलं।

(कल्याणमित्र, सत्यनारायण गोयन्का)

मंगल मृत्यु

1. वरिष्ठ सहायक आचार्य श्री मन्नीलाल यादव, फतेहपुर, (उ.प्र.) गत 25 फरवरी, 2025 को 88 वर्ष की आयु में शांतिपूर्वक दिवंगत हुए। वे 2008 में स. आ. एवं 2011 में वरिष्ठ स. आ. बन कर अनेकों शिविर संचालित किये और लोगों की खूब सेवा की। धम्मपरिवार की यही मंगल कामना है वे निर्वाण-प्राप्ति तक धर्मपथ पर उत्तरोत्तर प्रगति करते रहें।

2. गांधीनगर (गुजरात) के वरिष्ठ स. आचार्य श्री जयपाल संघदीप 16 मार्च, 25 को दिवंगत हुए। वे 1995 में सहायक आचार्य नियुक्त हुए और 2013 में वरिष्ठ स. आ.। तब से नियमित रूप अपनी धर्मपत्नी के साथ अनेक शिविरों में सेवा देकर उन्होंने अपना जीवन धन्य कर लिया। धर्मपथ पर उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए वे निर्वाणलाभी हों, धम्मपरिवार की यही मंगल कामना है।

धम्म अरुणाचल-2 का उद्घाटन

धम्म अरुणाचल-1 के बगल में बुद्ध पूर्णिमा के दिन इस नये केंद्र का उद्घाटन हो रहा है। अधिक जानकारी के लिए (TIRUVANNAMALAI) तिरुवन्नामलाई, तमिलनाडु के 'धम्म अरुणाचल' के व्यवस्थापकों से संपर्क करें या निम्न वेबसाइट देखें।

E-Mail: info.arunachala@vridhamma.org
Web: www.arunachala.dhamma.org

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री चन्द्रशेखर दाते, केंद्र आचार्य सांगली के साथ धम्मालय कोल्हापुर, विपश्यना केंद्र के लिए केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा तथा सोलापुर, सातारा, सांगली एवं कोल्हापुर क्षेत्र के क्षेत्रीय आचार्य की सहायता

2-3. श्री राजेन्द्र कुमार एवं श्रीमती शीला शर्मा, धम्म कल्याण विपश्यना केंद्र, कानपुर के केंद्र-आचार्य की सहायता

4. श्री नरेश पटेल, धम्माचल विपश्यना केंद्र, माउंट आबू राजस्थान के लिए केन्द्र-आचार्य के रूप में सेवा

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

1. श्री अशोक बाभळे, रायगढ़

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1-2. श्री महेश एवं श्रीमती वंदना वाळवेकर, सांगली

3-4. श्री तात्यासाहेब एवं श्रीमती रेखा पाटिल, कोल्हापुर

5. कु. मिलन कोरगावकर, कोल्हापुर

6. श्री अरुण अंजरकर, कोल्हापुर

7. श्रीमती विजया पवार, धुले

8. श्री मौजी लाल संखवार, कानपुर, उ. प्र.

9. सुश्री तृप्ति सिंह, मिर्जापुर, उ. प्र.

10. सुश्री संदीप कौर विर्क, करनाल, हरियाणा

11. श्री राजेन्द्र कुमार मेहता, गुरुग्राम, हरियाणा

नव नियुक्तियां
सहायक आचार्य

1. श्री आनन्द करिया, मुंबई
2. श्री उल्हास फुलझेले, नाशिक
3. श्री दौलत गांगुर्डे, नाशिक
4. श्रीमती चन्द्रप्रभा घुगे, औरंगाबाद
5. श्रीमती पायल शेंडे, नागपुर
6. कु. श्रीदेवी राव, हैदराबाद
7. श्री मधु नाग एच एम, बैंगलोर
8. श्री जे. एम. चेलुवाराजू, बैंगलोर

9-10. श्री हनुमन्थ राव एवं श्रीमती कल्याणी कुर्रा, चिराला, आन्ध्र प्रदेश

11. श्री हरिहर नागराजन मुरुगन, थेनी, तमिलनाडु
12. श्री दिलीप कुमार योन्जन, दार्जिलिंग
13. Mr. Om Sithol, Cambodia

बालशिविर शिक्षक

1. Ms Alexandra Nafari, Sweden
2. Ms Zhanna Tsvir, Ukraine

ग्लोबल विपश्यना पगोडा, गोराई, मुंबई में

1. एक-दिवसीय महाशिविर:

1. रविवार, 11 मई, 2025 बुद्ध-पूर्णिमा के उपलक्ष्य में।
2. रविवार, 13 जुलाई, 2025 आषाढ़-पूर्णिमा (धम्मचक्कपवत्तन दिवस) के उपलक्ष्य में।
3. रविवार, 05 अक्टूबर, 2025 पूज्य गुरुजी की पुण्यतिथि (29 सितंबर, 2013) के उपलक्ष्य में।
4. **रविवार,** 18 जनवरी, 2026 माताजी की पुण्य-तिथि (5 जनवरी, 2016) एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि (19-1-1971) के उपलक्ष्य में।

2. एक दिवसीय शिविर प्रतिदिनः

इनके अतिरिक्त विपश्यना साधकों के लिए पगोडा में प्रतिदिन **एक दिवसीय शिविर** आयोजित किए जा रहे हैं। कृपया शामिल होने के लिए निम्न लिंक का अनुसरण करें और एक बड़े समूह में ध्यान करने के अपार सुख का लाभ उठाएं—*समग्गानं तपोसुखो*। **सब के लिए संपर्क: 022 50427500 (Board Lines)** - Extn. no. 9, मो. **+91 8291894644.** (प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online registration: http://oneday.globalpagoda.org/register; **Email:** oneday@globalpagoda.org

3.'धम्मालय' विश्राम गृह

एक दिवसीय महाशिविर के लिए आने पर रात्रि में **'धम्मालय'** में विश्राम के लिए सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए **संपर्कः** 022 50427599 or Email- *info.dhammalaya@globalpagoda.org or info@globalpagoda.org*

दोहे धर्म के

धन्य! धन्य! गुरुदेव जी, धन्य! बुद्ध भगवान।
शुद्ध धर्म ऐसा दिया, होय जगत कल्याण॥
हिंदू हो या बौद्ध हो, मुस्लिम हो या जैन।
शुद्ध धर्म का पथिक हो, रहे सुखी दिन रैन॥
शुद्ध धर्म का होय जब, सर्वांगीण विकास।
तो सद्गुण सद्भाव का, उज्ज्वल जगे उजास॥
शुद्ध धर्म से टूटती, संप्रदाय दीवार।
जो धारे उसके लिए, खुलें मुक्ति के द्वार॥
शुद्ध धर्म मुझको मिला, ऐसा सब पा जायँ।
मेरे मन-सा शांति सुख, जन-जन मन छा जाय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

सुद्ध धरम फिर स्यूं जगै, हुवै जगत कल्याण।
जन जन रा दुखड़ा मिटै, मिट ज्यावै अग्यान॥
सुद्ध धरम रो जगत मँह, फैलै सुभ आलोक।
जन जन मन प्रग्या जगै, जन जन हुवै असोक॥
सुद्ध धरम धारण करै, मिटै दंभ अभिमान।
मिलै घणो संतोस सुख, धरम करै कल्याण॥
मानव जीवन रतन सो, ब्रिथा न कर बरबाद।
ईं जीवन ही चख सकै, सुद्ध धरम रो स्वाद॥
संप्रदाय रो संखियो, जात-पांत रो ज्हैर।
सेवन करतो ही रह्यो, कठै खेम, सुख, खैर?

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6, अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकॉफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2568, चैत्र पूर्णिमा, 12 अप्रैल, 2025

वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 100.00, (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50) "विपश्यना" (संशोधित) रजि. नं. MHHIN/25/RAA23, **प्रति अंक शुल्क ₹ 0.00**

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)
DATE OF PRINTING: 8 April, 2025, DATE OF PUBLICATION: 12 April, 2025

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086,
244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org